LATEST EDITON

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3c संस्कृतम् + शिक्षण विधयः

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL - 2

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 3 (C)

संस्कृतम् + शिक्षण विधयः

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की*** *परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* ***/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order at ➡ https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes

Whatsapp Link – https://wa.link/hx3rcz

Contact us at – 8233195718 + 8504091672

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

1. संज्ञाप्रकरणतः सामान्यप्रश्नाः इत् संज्ञा, संहिता, सवर्णम् उदात्तः, अनु स्वरितः, उच्चारणस्थानानि । 1

2. प्रत्ययप्रकरणम् - कृन्दत प्रकरणम्, तद्धित प्रकरणम्, स्त्री प्रकरणम् 14

3. सन्धि 19

4. समासाः 32

5. निम्नलिखितानां शब्दरूपाणां ज्ञानम्- राम, हरि, गुरू, मति, रमा, वारि, अस्मद्, युष्मद् 43

6. निम्नलिखितानां धातुरूपाणां ज्ञानम्- भू एध् (लट् लकार लृट् लकार, लकार, लोट् लकार, विधिलिड, लकार) 53

7. अव्ययानां प्रयोगः 58

8. उपसर्गाः 62

9. कारकप्रकरणम् 66

10. हिन्दीवाक्यानां संस्कृतानुवादः 73

11. अशुद्धिसंशोधनम् 78

12. संस्कृतसाहित्येतिहास-सम्बन्धि-सामान्य परिचयात्मक-प्रश्ना 92

- लौकिक साहित्यम् रामायणम्, महाभारतम् ।
- महाकाव्यकवयः - कालिदासः, भारविः, माघः, श्रीहर्षः
- दृश्यकाव्यकवयः - भासः भवभूतिः शूद्रकः ।

13.शिक्षण विधयः

- संस्कृत भाषा – शिक्षण विधयः
- संस्कृत भाषा – संस्कृत सिद्धांताः
- संस्कृतशिक्षणाभिरुचिप्रश्नः
- संस्कृत भाषा कौशालस्य विकासः (श्रवणं, संभाषणं, पठनं, लेखनं)
- संस्कृतशिक्षणे – अधिगम साधनानि, संस्कृतशिक्षणे, सम्प्रेषणस्यसाधनानि, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि
- संस्कृतभाषाशिक्षणस्य मूल्यांकन – सम्बंधितः प्रश्नः , मौखिक – लिखित प्रश्नानाम प्रकाराः सततमूल्यांकनम , उपचारात्मक – शिक्षणम्

अध्याय – ।

संज्ञाप्रकरणतः सामान्यप्रश्नाः

इत् संज्ञा, संहिता, सवर्णम्

उदात्तः, अनु स्वरितः,

उच्चारणस्थानानि ।

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित किया जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्त्व होता है। इनका प्रयोग लाघव के लिए किया गया है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है।

अर्थ का कुछ नाम होता है। नाम कोई पद होता है। जैसे दशरथ का पुत्र, सीता का पति, यह अर्थ है, उस का नाम राम है। इसलिए राम नाम पद होता है। उसका अर्थ होता है - दशरथ का पुत्र और सीता का पति। इसलिए राम एक पद है। दशरथ का पुत्र यह अर्थ है। इसी को पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार के वाचक पद को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का अर्थ संज्ञी कहते हैं। जैसे राम पद संज्ञा है । दशरथ पुत्र संज्ञी है।

कुछ संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं–

आगम

किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे

संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है(मित्रवदागमः), जैसे– वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश

किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है(शत्रुवदादेशः),जैसे– यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है। यह आदेश पूर्व वर्ण के स्थान पर अथवा पर वर्ण के स्थान पर हो सकता है। पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर दीर्घादि रूप में 'एकादेश' भी होता है।

उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे– चिन्त् में 'त्' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न्' उपधा है (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा)। जैसे महत् में अन्तिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

पद

संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले ।४ प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अः) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (तः) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुप्तिङन्तं पदम्), यथा– रामः, रामौ, रामाः तथा भवति, भवतः, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है (अपदं न प्रयुञ्जीत)।

निष्ठा

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं– 'क्तक्तवतू निष्ठा'। इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे– गतः, गतवान् आदि।

विकरण

धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (नु), आदि प्रत्यय

- ***माहेश्वर सूत्र***

1.अइउण् 2 ऋलृक्, 3. ओ, 4. ऐच् 5. हयवरट् , 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11.खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषर् 14. हल्

ये चतुर्दश (14) माहेश्वर सूत्र हैं। इन सूत्रों के अन्त में ण् क् ङ् आदि एक-एक व्यञ्जन है। उसका नाम 'इत्' है। इन सूत्रों का प्रयोग प्रत्याहार निर्माण के लिए किया जाता है। प्रत्याहार संक्षेप होता है।

माहेश्वर सूत्रों का वैशिष्ट्य - वर्णसमाम्नाय, चतुर्दश सूत्री ये भी माहेश्वर सूत्र के अलग नाम हैं। वर्णसमाम्नाय में आ, ई, ऊ, ॠ, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, अनुस्वार ये वर्ण, और वर्ण सदृश ध्वनि नहीं हैं।

वर्णानां सर्वादृतः यः नैसर्गिकः क्रमः वर्तते तस्य महान् विपर्यासः अत्र परिलक्ष्यते।

स्वरों का क्रम प्रायः ऐसे ही बताया है। व्यञ्जनों में क्रम इस प्रकार हैं:- हकार (ऊष्म), अन्तस्थ, वर्गपञ्चम अनुनासिक, वर्ग चतुर्थ, वर्ग तृतीय, वर्ग द्वितीय, वर्ग प्रथम, ऊष्म ।

णकार की दो इत् संज्ञाएं होती हैं। लँण्-सूत्र में लकार से परे (बाद में) अँकार अनुनासिक होता है अतः इसकी इत् संज्ञा होती है। उस अवर्ण के साथ उच्चारित रेफ और रन्न संज्ञा होती है। अल् प्रत्याहार में सभी वर्ण होते हैं अतः अल् शब्द को वर्ण के अन्त तक गिनते हैं। अच् स्वर होते हैं और हल् व्यञ्जन यह विभाग परिलक्षित होता है।

1.2.1) प्रत्याहार निर्माण की प्रक्रिया

प्रत्याहार निर्माण की प्रविधि नीचे दी गई है।

अष्टाध्यायी में आचार्य पाणिनि कुछ वर्णों के समूह को प्रकट करने की इच्छा करते हैं। सामान्य उपाय तो यह है की उन वर्णों का साक्षात् उल्लेख हो। जैसे इ उ ऋ लृ के स्थान में क्रमशः य् व् 'ल् वर्ण करने चाहिए । यदि इ उ ऋ लृ के बाद अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ये वर्ण आएं तो । इस प्रकार से करना हालांकि सम्भव है परन्तु यह कठिन प्रक्रिया है, व बड़ी है। यदि लघु उपाय सम्भव हो तो अति उत्तम है । वही उपाय प्रत्याहार हैं। तब इस प्रकार होता है - ये वर्णाः प्रकटनीयाः सन्ति ते संकलनीयाः । उसके बाद माहेश्वर सूत्रों में जो क्रम है उस क्रम में जोड़ते हैं। वहां जो आदि अर्थात् प्रथम वर्ण होता है वह ग्राह्य होता है। उनमें जो अन्तिम होता है, वह माहेश्वर सूत्रों में कहां है देखते हैं। उसके बाद जो इत् संज्ञक वर्ण होता है वह ग्राह्य होता है । इस प्रकार आदि वर्ण के साथ इत् संज्ञक के मेल से प्रत्याहार बनता है।

उदाहरण

जैसे- ऋ लृ इ उ इन वर्णों की इच्छा करता हूँ। तब इनको माहेश्वर सूत्र क्रम में लिखता हूँ जैसे इ उ ऋ लृ । अब इनमें प्रथम वर्ण 'इ' है। अन्तिम वर्ण 'ल' है। माहेश्वर सूत्रों में उसके पश्चात् इत्-संज्ञक वर्ण 'क्' है। अब प्रथम वर्ण 'इ' के साथ इत्-संज्ञक 'क्' का मेल करता हूँ, तब 'इक्' यह शब्द होता है। यह 'इक्' प्रत्याहार बनता है। प्रत्याहार एक संज्ञा होती है। 'इक्' प्रत्याहार का अर्थ इ उ ऋ लृ ये चार वर्ण होता है।

इस प्रकार र् ल् व् य् इन वर्णों का संक्षेप में प्रकटन सम्भव होता है। इनका माहेश्वर सूत्रों में जो क्रम है उस क्रम में इस प्रकार लिखते हैं - य् व् र् ल्। उनमें आदि वर्ण 'य्' है। उनमें अन्तिम वर्ण 'ल्' है। माहेश्वर सूत्रों में उसके पश्चात् इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' है। 'य्' इसका 'ण्' के साथ मेल करने पर 'यण्' यह प्राप्त होता है । 'यण्' प्रत्याहार है। अतः यह 'यण्' संज्ञा है। इसके संज्ञि य् व् र् ल् ये वर्ण हैं। यण् इस शब्द में य वर्ण के बाद अ वर्ण जोड़ते (य् +'अ'+ण्)। तब यण् का उच्चारण सुकर होता है।

होता है। अर्थात् उदात्त से भी ऊर्ध्वभाग में निष्पन्न होता है।

स्वरित से परे उदात्त अथवा स्वरित यह स्थिति हो तो अनुदात्तभाग का उच्चारण अनुदात्त ही होगा।

स्वरित से परे अनुदात्त अथवा प्रचय यह स्थिति हो तो अनुदात्तभाग का उच्चारण उदात्ततर होता है। प्रचय अथवा एकश्रुति स्वरितस्वर के अनन्तर अनुदात्तस्वर व उसके बाद यदि उदात्त इति होवे तब उदात्त से पूर्व विद्यमान एक अनुदात्त अधोरेखा से चिह्नित होता है। उससे पूर्व विद्यमान अनुदात्त स्वरचिह्नहीन होते हैं। उन्हीं अनुदात्तों का नाम प्रचय अथवा एकश्रुति है ।

- **वर्ण विचार**

पुस्तक में पाठ होते हैं। पाठ में परिच्छेद होते हैं। परिच्छेदों में वाक्य होते हैं। वाक्यों में पद होते पदों में वर्ण होते हैं। वर्ण में क्या होता है। भाषा का यह अन्तिम जिसका और विभाजन न हो सके या अक्षर कहलाता है। संस्कृत भाषा में कितने अक्षर या वर्ण हैं इस विषय को विस्तार से जानते हैं।

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनि ने वर्णमाला को 14 सूत्रों में प्रस्तुत किया है। परंपरा के अनुसार महेश्वर ने अपने नृत्य की समाप्ति पर जो 14 बार डमरू बजाया, उससे ये 14 (ध्वनियाँ) सूत्र पाणिनि को प्राप्त हुए—

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ।।

ये सूत्र इस प्रकार हैं

1. अइउण् (अ, इ, उ)
2. ऋलृक् (ऋ, ऌ)
3. एओङ् (ए, ओ)
4. ऐऔच् (ऐ, औ)
5. हयवरट् (ह्, य्, व्, र्)
6. लण् (ल्)
7. ञमङणनम् (ञ, म्, ङ्, ण्, न्)
8. झभञ् (झ्, भ्)
9. घढधष् (घ्, ढ्, ध्)
10. जबगडदश् (ज्, ब्, ग्, ड्, द्)
11. खफछठथचटतव् (ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्)

दशरूपक के अनुसार— नृत्त और नृत्य में भेद होता है। नृत्त भाव पर आश्रित होता है, जबकि नृत्य ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

12. कपय् (क्, प्)
13. शषसर् (श्, ष्, स्)
14. हल् (ह्)

प्रत्येक सूत्र के अन्त में हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया है (जैसे— अइउण् में 'ण्' हल् वर्ण है)। इन्हें प्रत्याहारों के अन्तर्गत आने वाले वर्णों के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता ।

वर्ण सामान्यतः बहुत सी पुस्तकों में निम्न ५५ वर्ण बताए गए हैं। परन्तु संस्कृत में इस प्रकार नहीं हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ (13)

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म (25) य र ल व श ष स ह (8)

अ आ अ३ इ ई इ३ उ ऊ उ३ ऋ ॠ३ ऌ ऌ३ ए ए३ ऐ ऐ३ ओ ओ३ औ औ३ (22)

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म (25)

य यँ र ल लँ व वँ श ष स ह (11)

ळ, अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय (5) 22+25+11+5=63 वर्णों का सविस्तार परिचय नीचे दिया गया है ।

स्वराः

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ (अं अः अनुस्वार और विसर्ग)

वर्गे स्पर्श वर्ण कु-कवर्ग चु-चवर्ग टु-टवर्ग तु-तवर्ग पु-पवर्ग प्रथम अल्प प्राण अ क च ट त - द्वितीय तृतीय चतुर्थ पञ्चम उच्चारण अन्तस्थः ऊष्मा स्थानम् महा प्राण ख छ ठ थ फ अल्प प्राण ग ज ड

द ब महा प्राण घ र झ ढ ध प अन्तस्थ वर्ण य र ल व (यणोऽन्तस्थाः ।) भ अल्प प्राण ङ ञ ण न म कण्ठ तालु मूर्धा दन्ता ओष्ठौ य र ल ह, विसर्ग श ष स

ऊष्म वर्ण श ष स ह (शल ऊष्माणः ।)

वस्तुतः संस्कृत में निम्न 63 वर्ण हैं।

वर्णमाला का वैशिष्ट्य - संस्कृत वर्णमाला अत्यन्त सुचिन्तित एवं वैज्ञानिक है। उसके अनेक वैशिष्ट्य हैं उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं।

पहले स्वर हैं, उसके पश्चात् व्यञ्जन हैं। स्वर और व्यञ्जन मिश्रित नहीं हैं।

स्वरों में शुद्ध स्वर हैं (अ आ अ ३ इ ई इ३ उ ऊ उ३ ऋ ॠ ऋ३ ऌ ओ ओ३ औ और ये जन्य (स्वरों से उत्पन्न) स्वर बाद में हैं। अ +इ=ए, अ + ओ औ इस प्रकार से ये स्वर बनते हैं। ऌ३) । ए ए३ ऐ ऐ३ अ+ए ऐ, अ+उ =ओ,

व्यञ्जनों को लिखने में तो अत्यन्त सूक्ष्मता है। 25 स्पर्श व्यञ्जन पहले हैं। उसके पश्चात् 7 अन्तस्थ व्यञ्जन हैं। अन्त में 4 ऊष्म व्यञ्जन हैं।

स्पर्श व्यञ्जन हि वर्गीय व्यञ्जन कहलाते हैं। उनके 5 वर्ग हैं। जिनके उच्चारण स्थान समान हैं। उन 5 स्पर्श व्यञ्जनों को एक जगह स्थापित किया गया है। जैसे- जिनका उच्चारण स्थान कण्ठ है- क ख ग घ ङ इन 5 स्पर्श व्यञ्जनों को एक जगह स्थापित किया गया है। इस समुदाय का नाम कवर्ग है। इसी प्रकार चवर्ग- च छ ज झ ञ का उच्चारण स्थान तालु है। टवर्ग- ट ठ ड ढ ण का उच्चारण स्थानम मूर्धा है। तवर्ग- त थ द ध न का उच्चारण स्थान दन्त है। पव र्गप फ ब भ म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

प्रत्येक वर्ग में प्रथम व्यञ्जन अल्पप्राण, द्वितीय महाप्राण, तृतीय अल्पप्राण, चतुर्थ महाप्राण, पञ्चम अल्पप्राण होता है।

पांचों वर्गों में अन्तिम वर्ण अनुनासिक है। जैसे- ङ ञ ण न म।

प्रत्येक वर्ग में पहले 2 व्यञ्जन कठोर उच्चारित होते हैं। अन्तिम 3 व्यञ्जन मृदु उच्चारित होते हैं। क ख ये कठोर हैं। ग घ ङ ये मृदु हैं। इसी प्रकार सभी वर्गों में हैं।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे— अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है, किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं—

यथा— अच् = अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ — यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड़ दिया गया है।

(क) हल् (पाँचवें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष् तथा स्।

आदायः	आ + दा + ल्यप्
विहायः	वि + हा + ल्यप्
संपठ्य	सम् + पठ् + ल्यप्
आनीयः	आ + नी + ल्यप्
संविद्यः	सम् + विद् + ल्यप्
आगम्यः	आङ् + गम् + ल्यप्
संरक्ष्यः	सम् + रक्ष् + ल्यप्

अध्याय – 3

सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ हैं – मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **"वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः"** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता हैं। 'विकृति' का मतलब हैं – वर्णपरिवर्तन।
- इस प्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता हैं, उसे 'सन्धि' कहते हैं।

जैसे –

(i) रमा + ईशः = रमेशः

(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)

(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)

(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण – उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया। यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि हैं।

❖ **संहिता** – 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व हैं – संहिता।

सूत्र – "परः सन्निकर्षः संहिता"

अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' हैं।

❖ 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध हैं कि –

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ।।

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती हैं।
जैसे –
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती हैं –
जैसे –
नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी –
जैसे –
देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती हैं अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन हैं कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें –

जैसे –

❖ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामौ गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
❖ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
❖ द्वाविंशे एवं वर्ष इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

➢ **सन्धि विच्छेद** – सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद हैं।
सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
जैसे – गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

➢ **सन्धि में क्या होगा - - - - - ?**

1. **दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता हैं –**
जैसे –
रवि + ईशः = रवीशः (इ + ई = ई)
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ + इ = ए)
सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. **दो वर्णों के निकट अने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता हैं।**
जैसे –
इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' – एक स्थान पर एक आदेश होगा।

3. **दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता हैं –**

जैसे – रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)

दोषः अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

भानु उ + उदयः

भानु ऊ दयः

= भानूदयः

5. मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ऋ)

मातृ ऋ + ऋणम्

मातृ ऋ णम्

मातृणम्

कुछ अन्य उदाहरण –

वाचन + आलयः = वाचनालयः

देव + आलयः = देवालयः

शस्त्र + आगारः = शस्त्रागारः

विद्या + आलयः = विद्यालयः

इ + इ = ई

कपि + ईशः = कपीशः

गौर + ईशः = गौरीशः

मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः

श्री + ईशः = श्रीशः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

गिरि + ईशः = गिरीशः

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

विधु + उदयः = विधूदयः

गुरू + उपदेशः = गुरूपदेशः

साधु + उक्तम् = साधूक्तम्

भू + ऊर्जा = भूर्जा

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = मातृणम्

पितृ + ऋणम् = पितृणम्

होतृ + ऋकारः = होतृकारः

होतृ + ऌकारः = होतृकारः

(b)**गुण संधि :-** आद् : गुण

नियम = अ/आ + ई/ई = ए

Ex.= नरेन्द्रः = नर + इन्द्रः

अ/आ + उ/ऊ = ओ परोपकारः = पर + उपकारः

अ + ऋ = अर् देवर्षिः = देव + ऋषि

गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = सुरेशः

राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः

रमा + ईशः = रमेशः

गण + ईशः = गणेशः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

उमा + ईशः = उमेशः

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = महोत्सवः

पीन + ऊरूः = पीनोरूः

गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = महर्षिः

ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः

वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

अ+ ऌ = अल्

तव + ऌकारः = तवल्कारः

शंका 1–अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता हैं ?

समाधान

(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' से "अ, ए, ओ" य तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए –

(ii) अ उच्चारणस्थान हैं – कण्ठ

इ का उच्चारणस्थान हैं – तालु

इसीलिए अ + इ = ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान हैं – कण्ठतालु

"एदैतोः कण्ठतालु"

शंका 2 – अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता हैं- – ?

समाधान – चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं – अ, ए, ओ। गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही हैं।

अ का उच्चारणस्थान हैं – कण्ठ

उ का उच्चारणस्थान हैं – ओष्ठ

इसीलिए अ+उ = ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान हैं – कण्ठोष्ठ। **'ओदैतोः कण्ठोष्ठम्'**

➢ इसी प्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण हैं। परन्तु एक सूत्र हैं **"उरण् रपरः'** जो कहता हैं कि यदि ऋ या ऌ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश हैं पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।

इसी प्रकार अ + ऌ = अल् हो जाएगा।

(c) **वृद्धि संधि :–** वृद्धि रेचि

नियम – अ/आ + ए/ऐ = ऐ

Ex. = तत्रैव = तत्त + एव

अ/आ + ओ/औ = औ

वनौषधि = वन + औषधि

<u>वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण</u>

अ + आ + ऐ ऐ = ऐ

न + एवम् = नैवम्

या + एवम् = यैवम्

लता + एषा = लतैषा

विष्णु ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' में मिल गया)

विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

ए + अ = ऽ

रमे + अत्र = रमेऽत्र

वने + अत्र = वनेऽत्र

ओ + अ = ऽ

को + अपि = कोऽपि

बालको + अपि = बालकोऽपि

को + अवादीत् = कोऽवादीत्

बालो + अवदत् = बालोऽवदत्

(B)**<u>पररूप संधि</u>** = एङि् पररूपम्

अकारान्त उपसर्ग + ए/ओ = पररूप

प्र + एजते = प्रजते

उप + ओवति = उपोषति

<u>पररूप सन्धि के उदाहरण</u>

(1)प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)

प्र अ + एजते (वर्ण विच्छेद)

प्र अ + एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)

<u>प्रेजते</u>

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)

उप् + ओषति (वर्ण विच्छेद)

उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)

उपोषति (सन्धियुक्त पद)

प्र + ओषति = **प्रोषति**

<u>व्यंजन संधि</u> :- (हल् संधि)

सकार - स, त, थ, द, ध, न

शकार - श, च, छ, ज, झ, ञ

(a)<u>श्चुत्व सन्धि</u> :- स्तोश्चनाश्चु :

पूर्वपद में - सकार परवर्ती पद में - शकार

आदेशानुसार

Change -(सकार का शकार में, तवर्ग का चवर्ग में)

Ex. - रामस्+ शेते = रामश्शेते

सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्

अन्य उदाहरण -

सद् + जनः = सज्जनः

कस् + चित् = कश्चित्

शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः

बृहद् + झरः = बृहज्झरः

दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः

उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

(b)**<u>ष्टुत्व संधि</u> :-** ष्टुनाष्टु :

पूर्वपद में – सकार (स, त वर्ग)

परवर्ती में – षकार (ष, ट वर्ग)

आदेशानुसार Change - (सकार का षकार में)

(त वर्ग का ट वर्ग में)

Ex. – रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

तत् + टीका = तट्टीका

उदाहरण –

1. तत् + टीका
   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)
   तट्टीका
2. रामस् + षष्ठः
   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)
   रामष्षष्ठः
3. उद् + ड्यनम्
   उड् + ड्यनम् (द् के स्थान पर ड्)
   उड्ड्यनम्
4. कृष् + नः
   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)
   कृष्णः
5. दुष् + तः
   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)
   दुष्टः
6. चक्रिन् + ढौकसे
   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)
   चक्रिण्ढौकसे
7. विष् + नुः
   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)
   विष्णुः
8. पेष् + ता
   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)

(c) **तोर्लिय** – (लत्व संधि)

पूर्वपद में – तवर्ग

परवर्ती में – लकार

Change :- सवर्ण हो जाता हैं।

Ex. = तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लेख = उल्लेख

तत् + लय = तल्लय

उदाहरण –

(i) उद् + लिखितम्
    उल् + लिखितम्
    उल्लिखितम्
(ii) तद् + लीनः
    तल् + लीनः
    तल्लीनः
(iii) उद् + लेखः
    उल् + लेखः
    उल्लेखः
(iv) विद्वान् + लिखति
    विद्वाल्ँ + लिखति
    विद्वाँल्लिखति
(v) तद् + लयः
    तल् + लयः
    तल्लयः
(vi) महान् + लाभः
    महाँल् + लाभः
    महाँल्लाभः
(vii) विपद् + लीनः

(h)**<u>छत्व सन्धि</u> :-** इच्छोऽटि

पूर्व पद - सकार

Ex. = तद् + शिवः = तच्छिवः

परवर्ण - शकार

सत् + शीलः = सच्छीलः

Change – छकार हो जाता हैं।

➢ <u>विसर्ग संधि</u>

<u>सत्व सन्धि</u> :-

(1) <u>विसर्जनीयस्य सः</u> :- कुछ नियमों को देखना पड़ता हैं -

नियम :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

विसर्ग (:) + खर् (वर्ग का 1, 2 वर्ण / श ष स) = स्, ष्, श्

(a)**(विसर्ग (:)** + क् / त् = स्

Ex.= नमः + कार = नमस्कार

नमः + ते = नमस्ते

(b)**(विसर्ग (:)** + च / छ = श्)

Ex. = निः + चल = निश्चल

निः + छल = निश्छल

कः + चित् = कश्चित्

(c)**(विसर्ग (:)** + क, ख / ट,ठ / प,फ = ष्)

Ex. = धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + प्राण = निष्प्राण

रामः + टीकते = रामष्टीकते

(2) **<u>रूत्व सन्धि</u> :-**

(a)<u>ससजुषोरूः</u> :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

(अ/आ) को छोड़कर + स्वर/ = तो (र्) होता

अन्य स्वर आना/ वर्ग का 1,2,3 हो

विसर्ग (:)

Ex. = निः + बल = निर्बलः

[यदि विसर्ग का मेल व्यंजन से हो, तो

दुः + बल = दुर्बलः आधा (र्) बनता हैं।]

निः + उत्तर = निरुत्तरः [यदि विसर्ग का मेल स्वर से हो

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा तो पूरा (र) बनता हैं।

(3) **<u>उत्व सन्धि</u> :-**

(a)<u>अतो रोर प्लुतादप्लुते</u> :-

पूर्वपद + परवर्ण = आदेश

विसर्ग से पहले + (अत्) हो, तो (र) के स्थान पर (उ) हो जाता।

(अ) होना

Ex. = रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

शिवः + अवदत् = शिवोऽवदत्

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 9

कारक

कारक

↓

कृ (धातु) + ण्वुल प्रत्यय

परिभाषाः –

क्रिया जनकत्वं कारकम् कारकत्वम्।

क्रिया करोति इति कारकम्।

वाक्यों में जिन जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा संपर्क रहता है, उसे कारक कहते हैं।

उदाहरण – कक्षाया अध्यापकः शिवः।

दशरथस्य पुत्रः रामः।

कारक	विभक्ति	कारक चिन्ह
कर्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितिया	को
करण	तृतीय	से/द्वारा
संप्रदान	चतुर्थी	के लिए
अपादान	पंचमी	से (पृथक)
सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	सप्तमी	में/पर

नोटः संबंध को कारक नहीं माना गया है, संबंध में षष्ठी विभक्ति 'शेषार्थ' अर्थ में होती है।

उदाहरण – दशरथस्य पुत्रः रामाः।

कक्षाया अध्यापकः शिवः।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति – कर्ता कारक

1. **प्रतिपादिकार्थ** – (निश्चित अर्थ होता है)

उदाहरणः कृष्णः (अपनी तरफ खींचने वाला)

रामाः (समाहित होने वाला)

श्री, ज्ञानम, उच्चैः, नीचैः (अव्यय)

2. **लिंग** – तीन – तटः (किनारा) तटी तटम्

3. **परिमाण** – (नाप – तोल) – द्रोणों व्रीहीः

↓

वाल्टी भार

चावल

4. **वचन** – (तीन) – एकः, द्वओ, बहवः

5. **संबोधन** – प्रथमा – हे राम!

द्वितीया विभक्ति – कर्म कारक

'कर्तुरिप्सितं कर्मः'

कर्मणि द्वितीया

उदा. – राम हरि को भजता है।

↓

कर्ता कर्म क्रिया

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

धातु	प्रयोग	अर्थ
1. **दह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता हैं।
2. **याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते। सः नृपं क्षमां याचते।	हरि वामन बलि से पृथ्वी माँगते हैं। वह राजा से क्षमा माँगता हैं।
3. **पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती हैं।
4. **दण्ड्** (दण्ड़ देना)	राजा चौरं शतं दण्ड़यति।	राजा चोर से 100 रूपये दण्ड़ लेता हैं।
5. **रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रूणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता हैं।
6. **प्रच्छ्** (पूछना)	गुरूः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरू शिष्य से प्रश्न पूछता हैं।
7. **चि** (चुनना)	बलकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता हैं।
8. **ब्रू** (बोलना)	गुरूः शिस्यं धर्मं ब्रूते।	गुरू शिष्य से धर्म बताता हैं।
9. **शास्** (उपदेश देना)	गुरूः शिस्यं धर्मं शास्ति।	गुरू शिष्य को धर्म का उपदेश देता हैं।
10. **जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवतदत्त से सौ रूपये जीतता हैं।
11. **मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथनाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता हैं।

एक संन्यासी था। उसके हाथ में सोने का कंगन था। संन्यासी ने घोषणा की कि 'सर्वाधिक दरिद्र को यह (कंगन) दूँगा।' अनेक दरिद्र आये, संन्यासी ने किसी को भी वह सोने का कंगन नहीं दिया। एक बार उस रास्ते से राजा आया। संन्यासी ने उसे सोने का कंगन दिया। राजा हूँ मैं', मेरा विशाल राज्य और अपार ऐश्वर्य है। मैं दरिद्र नहीं हूँ, फिर भी मुझे किसलिये यह दिया?'' ऐसा राजा ने पूछा। राज्य का विस्तार करना ' चाहिये, सम्पत्ति को बढ़ाना चाहिये, इस प्रकार की आपकी बहुत सारी आशाएँ हैं। जिसकी आशाएँ अधिक हैं वही दरिद्र है। अतः मैंने आपको यह स्वर्ण कंगन दिया। ऐसा'' संन्यासी ने कहा।

एकः संन्यासी आसीत्। तस्य हस्ते सुवर्ण कङ्कणम् आसीत। संन्यासी अघोषयत् यत् बहवः दरिद्राः 'परमद्दरिद्रस्य कृते एतत् दास्यामि।' आगताः। संन्यासी कस्मैचिदपि सुवर्णकङ्कणं न अददात्। एकदा तेन मार्गेण राजा आगतः। संन्यासी तस्मै सुवर्णकङ्कणम् अददात्। अहं '' राजा। मम विशालं राज्यम्, अपारम् ऐश्वर्यं च अस्ति। अहं दरिद्रः न। तथापि मह्यं किमर्थम् एतत् दत्तम्?'' इति राजा अपृच्छत्। राज्यं ' विस्तारणीयम्। सम्पत्तिः वर्धनीया इत्येवं भवतः बह्वयः आशाः। यस्य आशाः अधिकाः स एवदरिद्रः। अतः मया भवते सुवर्णकङ्कणं दत्तम्इति ' अवदत् संन्यासी।

अध्याय – II

अशुद्धि संशोधनम्

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप		शुद्ध (पाणिनीय) रूप
अत्योक्तिः	-	अत्युक्तिः
उपरोक्तम्	-	उपर्युक्तम्
मनज्ञः	-	मनोज्ञः
यशगानम्	-	यशोगानम्
यशलाभः	-	यशोलाभः
रजगुणः	-	रजोगुणः
तमगुणः	-	तमोगुणः
मनहरः	-	मनोहरः
पयोपानम्	-	पयःपानम्
निरवः	-	नीरवः
निरसः	-	नीरसः
निरोगः	-	नीरोगः
निरोत्साही	-	निरुत्साहः
आशिर्वादः	-	आशीर्वादः
ज्योत्सना	-	ज्योत्स्ना
अतैव	-	अत एव
संस्कृतछात्रः	-	संस्कृतच्छात्रः
प्रातकालम्	-	प्रातःकालम्
छत्र छाया	-	छत्रच्छाया

अन्तर्राष्ट्रियम् अन्ताराष्ट्रियम्	-	मनवाञ्छितम् मनोवाञ्छितम्

अशुद्ध रूप		शुद्ध रूप	
पथप्रदर्शकः	-	पथिप्रदर्शक	(पथिन् शब्द का समास)
पथप्रेरकः	-	पथिप्रेरकः	(पथिन् शब्द का समास)
विषयनिष्ठम्	-	विषयस्थम्	(विषय पद,न कि विषयन्)
कर्तृनिष्ठम्	-	कर्तृस्थम्	(कर्तृ मूल पद, न कि कर्तृन्)
महिमायुक्तम्	-	महिमयुक्तम्	(मूल पद महिमन्)
गरिमायुक्तम्	-	गरिमयुक्तम्	(मूल पद गरिमन्)
मंत्रीमण्डलम्	-	मंत्रिमण्डलम्	(मंत्रिन्+ मण्डल)
नेतागणः	-	नेतृगणः	(नेतृ + गण)
स्वामीभक्तः	-	स्वामिभक्तः	(स्वामिन् + भक्त)
योगीराजः	-	योगिराजः	(योगिन् + राज)
महाराजा	-	महाराजः	(समासान्त प्रत्यय होने पर अकारान्त)
भ्रातागणः	-	भ्रातृगणः	(भातृ + गण)
माताहीनः	-	मातृहीनः	(मातृ + हीन)
दम्पतिः	-	दम्पती, जम्पती, जायापती	
दृढनिश्चयी	-	दृढनिश्चयः	
सशंकितः	-	सशंकः	
पतिव्रता	-	पतीव्रता	
प्रत्येकस्य	-	प्रत्येकम्	
मीनाक्षिणी	-	मीनाक्षी	

प्रत्ययगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप		शुद्ध रूप	
महत्वम्	-	महत्त्वम्	(महत् + त्व)
सत्वम्	-	सत्त्वम्	(सत् + त्व)

रमा वर्षायां क्रीडति	-	रमा वर्षासु क्रीडति	(वर्षा-नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)
देवदत्तः शक्तुं पिबति	-	देवदत्तःशक्तून् पिबति	(सक्तू-नित्य बहुवचन व पुंल्लिङ्ग)
रामस्य दारा सीता	-	रामस्य दाराः सीता	(दारा-नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)
अक्षतं समर्पयामि	-	अक्षतान् समर्पयामि	(अक्षत - नित्य बहुवचन व पुंल्लिङ्ग)
प्रजा आगतवती	-	प्रजाः आगतवत्यः	(प्रजा - नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)

लिङ्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप		शुद्ध (पाणिनीय) रूप
1. मया विसर्गसन्धिः पठिता	-	मया विसर्गसन्धिः पठितः
2. तस्याः ध्वनिः मधुरा	-	तस्याः ध्वनिः मधुरः।
3. वृत्तस्य परिधिः का ?	-	वृत्तस्य परिधिः कः?
4. बीजेभ्यः अङ्कुराणि उत्पद्यन्ते	-	बीजेभ्यः अङ्कुराः उत्पद्यन्ते।
5. तस्य महिमा उत्कृष्टा	-	तस्य महिमा उत्कृष्टः।
6. देशस्य गरिमा रक्षणीया	-	देशस्य गरिमा रक्षणीयः।
7. कालिदासः कविरन्नः आसीत्	-	कालिदासः कविरन्नम् आसीत्।

कारकगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप		शुद्ध (पाणिनीय) रूप	
सः बसयानात् आगतवान्	-	बसयानेन	(बसयान करण है)
कालिदासात् लिखितः	-	कालिदासेन	(कालिदास अनुक्तकर्ता है)
गोः दुग्धं दोग्धि	-	गां दुग्धं दोग्धि	(अकथित कर्म)
रमेशात् रुप्यकाणि याचते	-	रमेशम्	(अकथित कर्म)
तण्डुलैः ओदनं पचति	-	तण्डुलान्	(अकथित कर्म)
छात्रेभ्यः शतं दण्डयति	-	छात्रान्	(अकथित कर्म)
रामात् मार्गं पृच्छति	-	रामम्	(अकथित कर्म)
राकेशात् कुशलं पृच्छति	-	राकेशम्	(अकथित कर्म)

अध्याय – 13

संस्कृत भाषा – शिक्षण – विधयः

विधाओं के अनुसार शिक्षण विधियाँ

→ **व्याकरण शिक्षण की विधियाँ** → व्याकरण शिक्षण के लिए अनेक प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है ! डा. संतोष मित्तल ने इन विधियों को निम्नानुसार दो श्रेणियों में विभाजित किया है – (क) प्राचीन विधियां → 1. आगमन विधि 2. निगमन विधि 3. सूत्र या केय्स्थीकरण विधि 4. पारायण विधि 5. भाषा संसर्ग या अशाकृति विधि 6. अर्थावबोधन या वाद विवाद विधि 7. अन्वय व्यतिरेक विधि 8. व्याख्या विधि

(ख) अर्वाचीन विधियाँ → 1. आगमन – निगमन विधि 2. समवाय या सहयोग विधि 3. पाठ्यपुस्तक विधि

अन्य विधि → 1. अनोपचारिक विधि या सैनिक विधि

1. आगमन विधि

व्याकरण पढ़ाते समय जब कोई शिक्षक सर्वप्रथम बालकों के समक्ष कुछ विशेष उदाहरण प्रस्तुत करता है , तदुपरान्त इन उदाहरणों की समानता को देखकर छात्रों की सहायता से किसी नियम की स्थापना करता है !पुनः उस नियम की सत्यता को जाचनें के लिए कुछ अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत करता है तो वह आगमन विधि कहलाती है !

परिभाषाएं →

1. 'जायसी' के अनुसार → ' आगमन विशेष दृष्टान्तों की सहायता से सामान्य नियमों को विधिपूर्वक प्राप्त करने की क्रिया है !'
2. 'लेंणडन' के अनुसार → 'जब कभी बालकों के समक्ष कुछ विशेष तथ्य /वस्तुएं एवम उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है एवम बालकों से स्वंय उनके निष्कर्ष निकलवाये जाते है तो वह आगमन विधि कहलाती है !
3. 'युंग / जुंग ' के अनुसार → 'जिस विधि में बालक विविध स्थूल तथ्यों के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वंय किसी सामान्यत नियम या सिद्दान्त तक पहुचनें का प्रयास करता है तो वह आगमन विधि कहलाती है !

→ आगमन विधि के प्रमुख पद /चरण /सोपान → इस विधि का प्रयोग करने पर एक शिक्षक को प्रमुखतः निम्न चार चरणों से गुजरना पड़ता है –

1. **उदाहरण प्रस्तुतिकरण** → इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा छात्रों के समक्ष कुछ विशेष उदाहरण किये जाते है ! ' Walk, Palm, Half, Talk' इत्यादि

2. **'निरिक्षण या तुलना** → इसके अन्तर्गत प्रस्तुत उदाहरणों में किसी विशेष समानता को देखा जाता है ! जैसे – उपयुक्त सभी शब्दों का उच्चारण करने पर 'l'की ध्वनि गुप्त (silent)हो !
3. **नियमीकरण या सामान्यीकरण** → इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा छात्रों की सहायता से किसी नियम की स्थापना की जाती है ! जैसे :- 'किसी शब्द में 'a+l+k/m/f' प्राप्त होने पर 'l'की ध्वनि लुप्त (silent) हो जाती है !
4. **सत्यापन या पुष्टि** → इसके अन्तर्गत बनाए गये नियम की सत्यता को जानने के लिए कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है ! जैसे :- 'Chalk Palm, Calf 'इत्यादि !

→आगमन विधि प्रमुख शिक्षण सूत्र →

1. उदाहरणतः नियमं प्रति !
2. विशिष्टत सामान्यं प्रति !
3. ज्ञातात अज्ञातं प्रति !
4. स्थुलात सूक्ष्म प्रति !
5. मुर्तात अमुर्त प्रति !
6. प्रत्यक्षात प्रमाण प्रति !

→ आगमन विधि के प्रमुख लाभ / गुण →

1. इस विधि से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है !
2. इस विधि से बालकों में खोजी प्रवृति का विकास होता है !
3. प्राथमिक स्तर या छोटे बालकों को व्याकरण शिक्षण के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त विधि मानी जाती है !

→ आगमन विधि के प्रमुख दोष / कमियां →

1. इस विधि में प्रशिक्षित एवम अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता पड़ती है !
2. यह विधि समय साध्य एवम क्षम साध्य विधि है !
3. उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए यह विधि उपयोगी नहीं मानी जाती है !

2. निगमन विधि

व्याकरण पढ़ाते समय जब कोई शिक्षक सर्वप्रथम बालकों को नियम या सिद्दान्त का ज्ञान करवाता है !तदुपरान्त उदाहरणों पर उस नियम का उपयोग करता है तो निगमन विधि कहलाती है ! इस प्रकार यह विधि आगमन विधि की विपरीत विधि मानी जाती है !

→ निगमन विधि के प्रमुख पद / चरण/ सोपान → निगमन विधि में भी एक शिक्षक को निम्नानुसार चार चरणों से गुजरना पड़ता है यथा –

1. नियम या सिद्दान्त का ज्ञान करवाना → इसके अन्तर्गत शिक्षक सर्वप्रथम छात्रों के समक्ष कोई नियम प्रस्तुत करता है ! जैसे :- 'इ-ई(य) / उ - ऊ(व) /ऋ(र)/लु(ल)+असवर्ण / असमान स्वर
2. उदाहरणों पर उस नियम का प्रयोग → इसके अन्तर्गत बताये गए नियम को उदाहरणों पर लागू किया जाता है !जैसे :-

   'प्रति + आशा → 'प्रत्याशा

   'गुरु + आज्ञा → गुर्वाज्ञा

   धात्रु + अंशः → धात्रंशः

   लू + आकृतिः → लाकृतिः

3. परीक्षण → उसके अन्तर्गत उदाहरणों में बताये गए नियम की जाँच की जाती है ! जैसे :- उपयुक्त उदाहरणों में 'इ/उ/ऋ/लू' को क्रमशः 'य/त/र/ल' में बदला गया है !
4. सत्यापन या पुष्टि → इसके अन्तर्गत बताये गए नियम की सत्यता को जाचने के लिए कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है ! जैसेः- देवी + अपर्णम → देव्यर्पणम
   मधु + आचार्यः → मध्वाचार्यः
   पितृ + उपदेशः → पित्रुपदेशः
   लू + आकर : → लाकारः

→ निगमन विधि के प्रमुख शिक्षण सत्र →

1. 'नियमात उदाहरण प्रति !
2. सामान्यत ज्ञातं प्रति !
3. अज्ञातात ज्ञातं प्रति !
4. सूक्ष्मात स्थूलं प्रति !
5. अमुतार्त मूर्त प्रति !
6. प्रमाणात प्रत्यक्षं प्रति !

अस्तोभमनवधत्र्च सूत्रं सूत्र विदों बिदुः!!'

अर्थात निम्न छह लक्षणों से युक्त रचना को विद्वानों ने 'सूत्र' के नाम से पुकारा है –

(i) अल्पाक्षरम → छोटे – छोटे अक्षरों का समूह !
(ii) असंदिग्धम → सन्देह से रहित !
(iii) सारवद → सारांशपूर्ण !
(iv) अस्तोभम → अवरोध से रहित !
(v) अनवधम → निन्दा से रहित !

→ सूत्र के भेद →

'संज्ञा च परिभाषा च विधिनिर्यम एवम च !

झतिदेशोड्धिकरिश्च षड्विंध सूत्र लक्षणम !!'

संस्कृत व्याकरण में प्रस्तुत होने वाले सूत्र छः प्रकार के माने जाते हैं !जैसे :-

(i) संज्ञा सूत्र
(ii) परिभाषा सूत्र
(iii) विधि सूत्र
(iv) नियम सूत्र
(v) अतिदेश सूत्र
(vi) अधिकार सूत्र

6. भाषा संसर्ग विधि या अव्याकृति विधि

- बालक परिवार में रहकर नियमों को सीखे बिना ही 'मार्तृ भाषा को सीख लेता है !
- इसी प्रकार जब कोई बालक नियमों को सीखे बिना ही संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो वह भाषा संसर्ग विधि या अव्यकृति विधि कहलाती है !
- इस विधि के समर्थकों के अनुसार भाषा शिक्षण के लिए व्याकरण ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं मानी गयी है !
- इस विधि में शिक्षक अलग से कभी व्याकरण नहीं पढ़ाता है !
- इस विधि में शिक्षक छात्रों को अच्छी व्याकरण की पुस्तकों के नाम बता देता है !छात्र अपने स्तर पर उन पुस्तकों का अध्ययन करके भाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं !
- इस विधि के प्रयोग से बालकों के भाषण में स्पष्टता एवम मोलिकता आती है !
- 'तुरन्त प्रतिपुष्टि प्राप्त नही होना' इस विधि का एक प्रमुख दोष माना जाता है !

7. पारायण विधि

- यह विधि कंठस्थयीकरण विधि का ही एक व्यापक रूप मानी जाती है !
- वैदिक मन्त्रों या व्याकरण सूत्रों का बार – बार दोहराव करना ही पारायण कहलाता है !
- जब कोई बालक व्याकरण सूत्रों का बार – बार दोहराव करके उन्हें सीखने का प्रयास करता है तो वह पारायण विधि कहलाती है !
- पारायण करने वाले बालक को ' पारायणिक ' के नाम से पुकारा जाता है !
- पारायण प्रमुखतः 'तीन'प्रकार से किया जाता है ! यथा –

(i) पंचक अध्ययन → एक ही मन्त्र /श्लोक/सूत्र/पाठ को 5 बार पढना
(ii) पंचवार अध्ययन → श्लोक/मन्त्र/सूत्र/पाठ में आये हुए प्रत्येक शब्द को पांच बार पढना !
(iii) पंचरूप अध्ययन → एक ही श्लोक / मन्त्र/सूत्र/पाठ को पांच तरह से पढना !

- इसी प्रकार से 'पंचक' के स्थान पर 'सप्तक/अष्टक/ नवक' इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी किया जा सकता है !
- इस विधि के अनुसार उच्चारण में अशुदिध करने वाले बालकों को निम्नानुसार अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है !यथा –

(i) एक अशुद्रि करने वाला बालक → एकान्यिक

(ii) दो अशुद्धि करने वाला बालक → वैयन्यिक
(iii) तीन अशुद्धि करने वाला बालक → त्रैधन्यिक

- शिक्षा के अंश में इस विधि का प्रयोग भी पाणिनि काल से ही शुरू हो गया था!
- इस विधि के प्रयोग से भी बालकों में केवल रहने की प्रवृति का ही विकास होता है !अतः विधि वर्तमान में व्याकरण शिक्षण के लिए उपयोगी नहीं मानी जाती है !

8. समवाय या सहयोग या साहचर्य विधि

- यह व्याकरण शिक्षण की अर्वाचीन विधि मानी जाती है !
- इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक अलग से व्याकरण नहीं पढ़ाता है !
- गघ या पघ पाठ पढ़ाने के दोरान ही यदि व्याकरण से सम्बन्धित कोई अंश आ जाता है एवम शिक्षक उसी समय उसके नियम का ज्ञान करवा देता है तो समवाय या सहयोग या साहचर्य विधि कहलाती है !
- इस विधि के प्रयोग से बालक न तो व्याकरण का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर पाते है,साथ ही पढाये जा रहे पाठ का रस या आनन्द भी समाप्त हो जाता है!
- यह विधि आधुनिक शिक्षा के निम्नलिखित चार सिद्धान्तों पर कार्य करती है –

(i) हरबर्ट स्पेन्सर का 'सहसम्बन्ध'सिद्धान्त !
(ii) जान ड्युवी का 'समजस्यीकरण' सिद्धान्त !
(iii) फ्रोबेल का 'जीवन केन्द्रित शिक्षा'सिद्धान्त !
(iv) महात्मा गाँधी का 'बुनियादी शिक्षा' सिद्धान्त !

9. अर्थावबोधन या वाद-विवाद विधि

- अवबोधन का शाब्दिक अर्थ होता है- 'समझना'अर्थात इस विधि के अन्तर्गत बालक सूत्रों को रहने की अपेक्षा उनके सही अर्थ को समझने का प्रयास करता है!
- कोई अर्थ समझमें नहीं आने पर वह अपने साथियों अथवा शिक्षक से परिचर्चा भी करता है !
- इस विधि के प्रयोग से बालकों में तर्क एवम चिन्तन शक्ति का विकास होता है !

10. अन्वय – व्यतिरेक विधि

- इस विधि को प्रकृति प्रत्यय विधि भी कहा जाता है !
- व्याकरण पढ़ाते समय जब कोई शिक्षक बालकों को प्रत्येक शब्द की रचना (उपसर्ग , धातु,प्रत्यय इत्यादि) का ज्ञान करवाता है तो वह अन्वय – व्यतिरेक विधि मानी जाती है !
- यह विधि भी अलग से प्रयुक्त नही होकर अन्य विधियों के साथ जोड़कर काम में ली जाती है !

11. पाठ्यपुस्तक विधि

- यह विधि भी अर्वाचीन विधियों में शामिल की गयी है !
- प्रत्येक कक्षा में संस्कृत के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में प्रत्येक पाठ के अन्त में भाषिक सामग्री के अन्तर्गत व्याकरण से सम्बन्धित प्रश्न दिए जाते है !
- जब कोई शिक्षक उक्त भाषिक सामग्री के आधार पर व्याकरण का ज्ञान करवाता है तो वह पाठ्यपुस्तक विधि कहलाती है !
- इस विधि के प्रयोग से बालकों को सम्पूर्ण व्याकरण का ज्ञान प्राप्त नही होकर सीमित ज्ञान प्राप्त होता है !

12. अनोपचारिक सैनिक विधि

- इस विधि के अन्तर्गत विद्यालय / कक्षाकक्ष में व्याकरण का ज्ञान नही दिया जाता है !

1. इस विधि के प्रयोग से प्रशिक्षणार्थियों में
2. आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न होती है !
3. इस विधि के प्रयोग से प्रशिक्षणार्थि विविध शिक्षण कोशलों का सहज ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं !

→ सूक्ष्म शिक्षण विधि के दोष या कमियाँ →

1. इस विधि के अन्तर्गत एक समय में एक ही शिक्षण कौशलका अभ्यास करवाया जाता है !जबकि वास्तविक शिक्षण के रूप में सभी शिक्षण कोशलों का एक साथ प्रयोग करना पड़ता है !यह इस विधि का एक सर्वप्रथम दोष माना जाता हैं !

- **संस्कृत – भाषा – शिक्षण सिद्धान्ताः**

- किसी भी भाषा शिक्षण के सफलता के लिए बनाए गए नियम जो भाषा शिक्षण के आधारस्वरूप होते हैं "भाषा शिक्षण के सिद्धान्त" कहलाते हैं।
- संस्कृत भाषा शिक्षण की विशेषताओं को ध्यान में रखकर उसकी सफलता के लिए बनाए गए नियम संस्कृत भाषा शिक्षण के सिद्धान्त कहलाते हैं।
- भाषा शिक्षण सिद्धांतों का अनुसरण कर के ही भाषा शिक्षण को सफल बनाया जा सकता हैं।
- शिक्षक बच्चों में ज्ञान का स्थानांतरण करता हैं। इस Process को करने के लिए कुछ सिद्धांतों, नियमों तथा सुत्रों की आवश्यकता होती हैं ताकि बच्चे का ज्ञान स्थायी हो सकें

❖ **संस्कृतशिक्षणस्य सिद्धान्ताः**

(1) स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः (स्वभाविकता का सिद्धांत) :-

- भाषा अधिगम एक स्वभाविक प्रवृत्ति हैं (भाषा – अधिगमः एका स्वाभाविकी प्रवृत्तिः)
- संस्कृतस्य वातावरण निर्माणद्वारा शिक्षणम् (संस्कृत का स्वभाविक वातावरण द्वारा शिक्षण किया जाना चाहिए। यानी यदि हम संस्कृत पढ़ा रहे तो संस्कृत भाष में ही अध्यापन कराया जायें)
- पद्याना गायनम्, संस्कृतस्यभाषणकर्तृश्यः प्रोत्साहनम्, मौखिकपक्षेपु अधिक बलम्

(स्वभाविकता के सिद्धांत के अनुसार संस्कृत शिक्षण के लिए पद्यो का गायन कर पढ़ा सकते हैं, संस्कृत में वार्तालाप को प्रोत्साहन तथा मौखिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाना चाहिए)

(2) अभ्यासस्य सिद्धांत (अभयास का सिद्धांत) :-

- भाषा एका कलायां वर्तते कलायां प्रवीणता अभ्यास द्वारा एवं सम्भवति (भाषा एक कला हैं, कला में प्रवीणता अभ्यास द्वारा ही संभव हैं)
- कठिनध्वनिनाम् अभ्यासः, शुद्धोच्चारणे बलम्, दोषपरिहारः सुक्तिनां मुहाबराणां च ज्ञानम्

(अभ्यास के सिद्धांत के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षण करते समय कठिन ध्वनियों का अभ्यास, शुद्ध उच्चारण पर बल दिया जाए, मुहावरो का ज्ञान कराया जाए व बच्चे जो गलतिया कर रहे हैं वो उन्हें बताया जाए)

3. मौखिकतायाः सिद्धान्तः (मोखिकता का सिद्धांत) :-

- भाषणत्: भाषः (बोलने से ही भाषा अर्जन होती हैं)
- भाषायः मौखिकरूपं शिशुभ्यः अधि गामाय सरलम् (भाषा का मौखिक रूप शिशु के

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO